सुराज का भइल

ज० इकबाल

सुराज का भइल

गीत अउर गजल संग्रह

डा० इकबाल

प्रकाशक एवं मुद्रक :
विश्वकर्मा कम्प्यूटर प्रिन्टर्स
देवा बैरनपुर, गाजीपुर (उ.प्र.)
9451004398
सर्वाधिकार : लेखक

पहला संस्करण : 2006

मूल्य : Rs. 25

Published and printed by :
Vishwakarma Computer Printers
Deva bairanpur, Ghazipur (U.P.)
9451004398
Copy Right : Auther

First Edition : 2006

Price : Rs. 25

समर्पण

ओह! तमाम क्रान्तिकारी, देशभक्त, परिवर्तनकामी,
कवि, कलाकार, रचनाकार, अउरी गीतकारन के
जे समाज के बदले खातिर गोली कऽ
शिकार हो गइल।

आपन बात

अपना भोजपुरी गीतन क बारे में हमके बहुत कुछ नइखे कहे के। साँच बात इ बाटे कि न हमके भोजपुरी भाषा कऽ न व्याकरन क ढेर गियान बा। ढेर गियान जेकरा होला ऊ खराबो बात के सजा सँवार के सुनवइया आ पढवइया लोगिन क समना रख देला। बाकी जेकर गियान कम होला उ सोझे-सोझ आपन बात कह देला। चाहे केहू के तीत लागे, चाहे केहू के मीठ, चाहे केहू के करेजा में बरछी लागे, चाहे भाला। कम गियान क वजह से हमरा गीतनो क उहे हाल हऽ। हमके अपना ए भोजपुरी किताब क बारे में कहेके होखे तऽ हम एके नान्हन कऽ डेरा कह सकीलाँ। नान्ह लोगन क डेरा देखले होइब जा। जेकर गली, मकान, ओढ़ना, बिछवना कुल्हे चीज बेढ़ँगा आ बेतरतीब होला। ओइजा सतरह किसिम क कमिये-कमी लउकेला। उहे हाल हमार ए किताब क समझीं। जे में कमिये-कमी बा, एके माने में हमके कवनो संकोच नइखे।

सबसे जरूरी बात आप लोगन के इ बतावल चाहत बानी कि हम जियादा खेत-खलिहान, कल-कारखाना में काम करे वाला, सबके बरोबर समझे वाला, मजदूरन, किसानन, नौजवानन, आ देश क दुरदशा कऽ बारे में गीत लिखिलाँ। देश कऽ अजादी कऽ लड़ाई कऽ बारे में आप लोग हमरा ले जियादा जानत होइब जा। केतना मांग धोवाइल, केतना गोद सून भइलऽ केहू फाँसी पर चढल, केहू सीना पर गोली खाइल, केतना अदमी शहीद भइलँ तब जाके विदेशी भगलसन। सब सपना सजवले रहे कि लूट क राज खतम हो जाई, केहू ऊँच रही, ना केहू नीच, जोर जबरदस्ती ना होई। सुराज अवते सुख आ शान्ति कऽ बरखा होखे लागी। बाकी हो गइल कुल उल्टा। राजा-महराजा लोग एम०पी०, एम०एल०ए०, मंतरी-संतरी बन गइलन, गुण्डा-बदमाश, अपराधी, स्मगलर, समाजद्रोही, आ देशद्रोही काम करे वाला नेता परेता बनि के अगहर हो गइलन। अगर केहू गरीबन क बीचो से निकलल त कुर्सी पवते बदल गइल। जइसे पीतर क थरिया में

दुध पितरिया जाला। आज सगरो देखी भुखमरी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार नशाखोरी, कमीशनखोरी, लूट, हत्या, दंगा फसाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, कऽ केतना बजार गरम बा। झूठ आ फरेब जइसे ओढ़ना बिछवना हो गइल बा। केतना बुढ़वा तऽ इ कहे लगलँल कि ऐसे तऽ अंगरेजवने कऽ राज नीक रहे। हमके त कुछ बुझाते नइखे की सुराज का भइल।

पाठक लोगन से इहे विनती बा कि हमरा गलती खातिर हमके माफ करब जा। अउरी हमरा पता पर हमके सुझाव देवे क किरिपा करब जा। हम अभारी रहब।

कुल्ह संगी-साथी, समर्थक, शुभचिन्तक, सहयोगी, आ गीत गवइया लोगनन कऽ हम विशेष अभारी बानी कि जेसे जइसन बन पड़ल समय-समय पर हमके सहयोग देत रहेला।

डा० इकबाल
बेटाबर, गाजीपुर

२३ मार्च ०५

सम्पर्क :
ग्रा० - बेटाबर खुर्द
पो० - बेटाबर कलां
जि० - गाजीपुर (उ.प्र.)
Mob. - 9415886162

-: अभिशंशा :-

डा० इकबाल जी से हमार नाता सन् १९९३ से हऽ हमार उनकर रिश्ता एगो गुरू-शिष्य क हउवे। जब डाक्टर साहब हमरा से खुदे कहलं कि लिखते लिखत खराब से नीक आदमी लिखे लागेला, ऐना पारी हमरा भोजपुरी गीत क अभिशंशा तूहीं लिखऽ। हम बड़ा अचरज में पड़लीं कि डाक्टर साहब क सम्पर्क बड़ा अच्छा-अच्छा लेखकन, रचनाकारन, चिन्तकन से बा तब्बो काहें हमरे के कहतऽ बालन। आप लोग बस समझीं जां कि हमरा प्रति इ उनकर प्यारे हउवे।

जहां तक हम जानत समझत बालीं के कुछ लोग दुसरा के का नीक लागेला उ बात लिखेलं। केहू धन आ दउलत के लालच में लिखेला, केहू सड़ल-गलल वेवस्था के मजबूत करे के पक्ष में लिखेला, बाकि इकबाल जी या त समस्या प्रधान कविता लिखलं या त एगो वर्ग विशेष क पक्ष में कविता लिखेलं। उहो बड़ा हिम्मत क साथ।

एगो रचना क लाइन देखीं जा।

नर सेवा, नरायन सेवा, कहके भरमवले बा।
खेती-बारी, अन्न-धन कुल्हे हथियवले बा।।
मंदिरऽ में हीरा अउरी मोती जड़वावेला।
जाये के न छोड़े रस्ता डांड़ जोतवावेला।
बनल बा महन्थ चिलम गाँजा कऽ चढवले बा।

इकबाल जी क रचना में एक तरफ समाजिक कुरीतियन के बदले क चिन्ता होला त दूसरी तरफ देश चलावें वालन कऽ प्रति भी नफरत साफ दिखाई देला।

सइया दहेज कारन जन रिसीआई।
अपना परानी के जनि तड़िपाई।।

त दूसरी तरफ नेतावन पर कटाक्ष करतऽ उनके कहेके पड़लऽ

काहें देशवा कऽ माथ कटवाई दिहलऽ।
बचलऽ देशवा कऽ थाती लुटवाई दिहलऽ।।

देश के लुटेरवन क देशवा में रंग बा।
हमनी के खटलों प सतुआ महंग बा।।

जहाँ तक इकबाल जी क विषय में हम जानत बानी उ एगो विलक्षण मन क आदमी हउँव। उ कहीं बधुवा बन के टीक ना पावेलं। उनका जवन बात खराब लागेगा ओकरा के सोझे कह देलं। उनके ठकुर सोहइती ना सोहाला। भयंकर शारीरिक बीमारी रहलो पर अबहीं उनका पर जवान बेटा-बेटी क पढावे क बोझ, घर गृहस्थी चलावे कऽ चिन्ता, उपर से सामाजिक कामन कऽ बोझ, पता नाहीं कब इकबाल जी गीत-गजल लिख लेलं। इ उनही कऽ बस कऽ बात हऽ।

अन्त में हम इकबाल जी से इहे चाहब कि आपन यही तरह गीत-गजल लिखत रहीं, देश दुनियां बदलत बा आ बदलीं, एक न एक दिन लूट क राज खतम होइ। शोषण मुक्त समाज बनी। जेके बनावे में आपकऽ गीत गजल मील क पत्थर साबित होई।

इ हमार विश्वास बा!

डा० राधेश्याम केसरी

१५ जनवरी ०६
मकर संक्रान्ति

: विवरणिका :

क्रम सं०	गीत	पेज
१.	मन नाहीं धरे अब धीर हो....	१
२.	फटही लुगरिया में बीतली....	२
३.	जब हो जइबऽ फेल...	३
४.	काहें देशवा कऽ माथ कटवाई दिहलऽ....	४
५.	नर सेवा, नरायन सेवा....	५
६.	रखवाला जब से चिरइन कऽ बाज...	६
७.	सुतल मजदूर किसनवाँ....	७
८.	माई रे माई....	८
९.	सइयाँ दहेज कारन.....	९
१०.	पीयल छोड़ दऽ.....	१०
११.	हमके काहे दुरदुराइला....	११
१२.	तोहरो पसीना....	१२
१३.	खइला बिना डँहकावे...	१३
१४.	माई रे माई ई दुख....	१४
१५.	नाहीं होला पेट भर कमइया...	१५
१६.	सपना भइल सब.....	१६
१७.	पूछेले पुतरिया पुतरी से....	१७
१८.	हियरा में हुक उठे...	१८
१९.	बगिया लागावल नेह क....	१९
२०.	एइजा खोजलो पर....	२०
२१.	झगरा साँझे क करत-करत....	२१
२२.	हिन्द क नारी होके...	२२
२३.	जीवन परदेशवा में...	२३
२४.	जेके आपन गियान....	२४
२५.	सइयां केतना सहीं सँसतिया...	२५

क्रम सं०	गीत	पेज
२६.	के के आपन भला....	२६
२७.	देशवा में अब नाहीं चलि....	२७
२८.	हो ओ-ओ-ओ प्यारी सखी....	२८
२९.	आज नाहीं त काल्ह....	२९
३०.	हउवे कइसन इ सुराज....	३०
३१.	आपन सुधारऽ पिया....	३१
३२.	तोहरा राज में बिजूलिया....	३२
३३.	एहसास मर गइल बा....	३३
३४.	हमरा माँगि क सेनुरवा....	३४
३५.	हमका बात समुझ ना आइल...	३५
३६.	दिन इ जिनगी के लमहर...	३६
३७.	काम जग में जे परमारथ क....	३७
३८.	सारी फेंक के चड्ढ़ी अउरी....	३८
३९.	शासन भइल बा कसइया हो...	३९
४०.	चूवे बरखा में हमनी क....	४०
४१.	पतियो ना पठवेला सखी...	४१
४२.	गरमी सहे ल तूँही जाड़ा....	४२
४३.	तोहरे पसीना महक....	४३
४४.	दिन भर खटलो पर पेटवा....	४४
४५.	जियान जिन करीं रंग...	४५
४६.	पीयल गाँजा मोर राजा....	४६
४७.	का करी पुलिस थाना....	४७
४८.	काम, क्रोध, मद, लोभ क चक्का....	४८
४९.		

काहें देशवा कऽ माथ कटवाई दिहलऽ।
बचलऽ देशवा कऽ थाती लुटवाई दिहलऽ।। काहें....

कहलऽ गाँव-गाँव, घरे-घरे बिजुली भेजाइबऽ,
फइलल गाँव कऽ अन्हरिया के, दूर हम भगाइब,
तेलवा माटियों कऽ कँहवा भेजवाई दिहलऽ।। काहें...

सोना गिरवी रखाइलऽ, चुर्क डाला बेचाइलऽ,
भूखे मरे जनता पइसा स्वीस बैंक में रखाईल,
गिरवी देश कऽ अजादी रखवाई दिहलऽ।। काहें...

बड़का अबो लतिआवे, पुलिस जेल भेजवावे,
नाहीं सुने पटवारी, मुन्शी रोज दउरावे,
सबकर मन्ठा अस जिनिगी महवाई दिहलऽ।। काहें..

कहलऽ देइब रोजगार, इहें वादा बा हमार,
चमकी सबकर लीलार, केहू रही ना बेकार,
सुख कऽ सपना देखा के भरमाई दिहलऽ।। काहें...

उठल जनता कऽ ज्वार, देख लहकल जवार,
लाठी-गोली कऽ न चली जालिम अब सरकार,
बोल जनता के तू काहें बिसराई दिहल।। काहें..

फटही लुगरिया में बीतली उमरिया, सुराज का भइल।
ना बुझाला हो सँवरिया, सुराज का भइल।।

दूनू जाना खेत-खरिहान में खटींजा।
दाँ के ओसाके बखार हम भरींजा।
पेटवा में तबो काहें अठता लवरिया।। सुराज का....

उनकर काँहें बाटे ऊँच-ऊँच कोठी।
हमनी के बाटे मोहाल काँहे रोटी।
हमनी कऽ चूवता आ ढ़हता ओसरिया।। सुराज का..

उ कहालँऽ मालिक उनकर मेहर मलकाइन।
तोहके चमार कहे, हमके चमाइन।
नीक नाँही लागे सँइया अब बनिहरिया।। सुराज का...

उनकर बेटा-बेटी कार में घूमेलन।
नीक खालँ, नीक पहिरँ नीक से रहेलन।
हमनी कऽ बचवन के नइखे नोकरियाँ।। सुराज का...

हमके जनात बाटे, ए में कवनो राज बा।
चिरइन कऽ खोंतवा पर बइठल बाज बा।
हँसुआ कुदार के बनालऽ अब कटरिया।। सुराज का...

अपने मलपूआ चाभे हमके डँहकावे।
करम-कमाई कऽ हऽ दोष उ बतावे।
दूगो भगवान जइसे दूगो हऽ नजरिया।। सुराज का....

हो जइबऽ फेल बबुआ खुलि जाई पोल हो।
माई बाबू तोहरा से बालँऽ डँवा डोल हो।।

फिस कारन तोहरा माई बाबू फिफियाता।
पढ़ला से ढ़ेर तोहार बबरी झराता।
रोजे किनात बा तोहार कलम रोल हो।। माई...

फिलिम देखँऽ रातभर, आ छः बजे तक सुतेलन।
खाएकऽ ठेकान नाहिं आग में ई मूतेलन।
रस्ता चलत झगरा रोज-रोज लेलन मोल हो।। माई..

जालँ इस्कूल में तऽ रहि जालँ बहरा।
मनबढ़ू लइकन संगे लेलन इहो लहरा।
खाली पढ़ाई कऽ पिटात बाटे ढ़ोल हो।। माई...

धइले बा इनका कामिक्स कऽ बिमारी।
सबका ले इनकर विषय हऽ इहे भारी।
टेस्ट में नम्बर इनकर बाटे गोल-गोल हो।। माई...

पढ़ऽ बबुआ मानऽ इकबाल कऽ वचनियाँ।
नाहिं तऽ रहि जइबऽ बनि के पउनियाँ।
बीत जाई जिनिगी बबुआ झारत झोल हो।। माई....

मन नाहीं धरे अब धीर हो। मन...

सीता हरन करे रोज देखऽ रावन।
गाँव-गाँव आज केतना भइलँ दुशासन।
रोजे केतना बहीनिन कऽ अब खींचल जाता चीर हो।। मन.

दूश्मन भइल बाटे भइये कऽ भाई।
हमके जनाता सभे बनऽ गइल कसाई।
सबका खातिर सभे भइल बा आज बावनवीर हो।। मन.

मसिया कऽ मोटरी कऽ गिद्ध रखवार बा।
देश के लूटेरवन कऽ खूब अब सुतार बा।
लूटे वाला अरबपति बा जनता भइल फकीर हो।। मन...

सभई कहेला हम हँई तोहार संगी।
बात करे नीक-नीक चाल बा दुरंगी।
जइसे-जइसे बैद्य बढ़ेलन ओइसे बढ़े पीर हो।। मन...

देशवा बचावे खातिर बान्ह फिर कफनियां।
आज फिर अजादी खातिर देई द जवनिया।
हँसते-हँसते शीश कटा द जनि बहाव नीर हो।। मन...

नर सेवा, नरायन सेवा, कहि के भरमवले बा।
खेतबारी, अन्न-धनऽ, कुल्ह हथिवले बा।।

पत्थरा पर दूध जलऽ, अछतऽ गिरावेला।
मँगला पर बन्नी देखऽ, रगरा मचावेला।
मुँहवा में राम बगली, छूरी उ छिपवले बा।। खेत बारी..

मँदिर में हीरा अउरी, मोती जड़वावेला ला।
साँड़ अस डकारे, भोगऽ पहिले लगावे ला।
दान-दक्षिना देखऽ उपरा ले गठियवले बा।। खेतबारी.

जप-तप, योग-क्षेम, सबके बतावे ला।
पलखत पाके, माँस-मछरी उड़ावे ला।
राम नामी भगवा चादर, देखऽ फहरवले बा।। खेतबारी.

जागऽ सोमारू जागऽ, जागऽ कतवारू जागऽ।
जागऽ महेन्दर मथुरी, डर से न ओकरा भागऽ।
ले लऽ कुल्ह हिसाब उनसे, जे तोहके सतवले बा।। खेत.....

रखवाला जब से चिरइन कऽ बाज हो गइल,
तब से देखऽ आपन कइसन समाज हो गइल।।

गुण्डा नाच करे नंगा, भइल केहू बिल्ला रंगा,
लड़े कहीं भाई-भाई कहीं होत बाटे दंगा,
देखऽ अबरा कऽ बोली बन्द आज हो गइल।। रखवाला....

कोठा-कोठा सीताजी कऽ देख इज्जत लुटाता,
चीर द्रोपदी क देखऽ, चउरहवे पर खिंचाता,
बचलऽ मुश्किल में बहिनी कऽ लाज हो गइल।। रखवाला ...

मुल्ला-पंडित चाभे देखऽ भइया मुर्गा-मलाई,
लूटे सेठ साहूकार, बनि निपट कसाई,
आफत उपरा ले पुलिस गुण्डा राज हो गइल।। रखवाला...

जरे देख पनजाब, देखऽ जरे कश्मीर,
देखी-देखी आपन देश बहे आंखिया से नीर,
मालिक घरवा कऽ देखऽ दगाबाज हो गइल।। रखवाला ...

सुतल मजदुर-किसनवाँ जगावे के पड़ी।
मुक्ति खतिर संगठनवाँ बानवे के पड़ी।।

तोहरे मेहनत से देखऽ, ओकर बिंहसे अटारी।
तोहार बिलखे झोपड़िया आ ढहता ओसारी।।
खुनवा चूसतऽ ससनवां हटावे के पड़ी।। मुक्ति...

बड़का-छोटका लरिकवा के इस्कूल भेजावऽ।
लइकी जानि के न बबुनी से घास गढ़वाव।
पाठ मुक्ति कऽ सबके पढ़ावे के पड़ी।। मुक्ति...

देख बहकत जवनवाँ के राह तु देखावऽ।
लड़े बदे दुश्मनवाँ से फउजऽ तू बनावऽ।
मन में क्रान्ति कऽ बिरवा उगावे के पड़ी।। मुक्ति...

माई रे माई जिनिगी के लमहरऽ
कइसे के दिनवाँ ओराई रे माई।। २

पेट काटि-काटि माई हमके पढ़वलू,
फटही पहिरलू हमके नीक पहिरवलू,
सपना ना जनलीं तँवाई रे माई।। कइसे के...

अनपढ़ रहलँऽ बाबू कइलँऽ बनिहरिया,
पढ़ला पर नइखे मिलतऽ हमके नोकरिया,
तोहके का भेजीं, का खाँई रे माई।। कइसे के...

केहूँ चाभेला इहँवा, मुर्गा-मलाई,
जिनिगी भइल आपनऽ, कुक्कुर बिलाई,
नाहीं होला पेट भर, कमाई रे माई।। कइसे के...

सेठवन कऽ बाटे जाने केतना बखरिया,
हमनी कऽ नइखे नीक एकहू झोपड़िया,
बरखा में कँहवाँ लुकाईं रे माई।। कइसे के ...

पतिया लिखत मोर फाटेला छतिया,
नाहीं बीतें जल्दी इँहवाँ दुखवा की रतिया,
गइलँऽ तोहार मथुरी मुरझाई रे माई।। कइसे के...

शोषितऽ जवान बनिहँ अब तऽ लुकारी,
केतने कऽ कोठी जरी, केतने कऽ सारी,
सेहरा महेंन्दर सिर बन्हाई रे माई।। कइसे के...

सँइयाँ दहेज कारन जनि रिसिआइं।
अपना परानी के जनि तड़पाइं।।

ननदी कुबोली बोले, सास गरिवायें।
ससुर जी क बोलिया पर आँख भरि आवे।
अस मन करे कहीं बूड़ि धसि जाई।। अपना...

लेके नइखीं आइल इहँवा, हम सोना-चानी।
इज्जत तोहार हई, मति करि बेपानी।
पियासल पपिहरा के जनि कुहुकाई।। अपना...

धन-दउलत, सोना-चानी रहि जाई।
करनी तोहार नीकऽ इहवां गवाई,
छछनत जियरा के जनि छछनाईं।। अपना...

रउव चरनियाँ में उमर बिताइब।
पगरी डुबाइब नाहीं, आधी पेट खाइब।
घरवो से आप जनि हमें बइलाईं।। अपना....

पीयल छोड़ द तू हीरोइन-शराब बालमऽ।
रोटी ना मिलि इ काम बा खराब बालमऽ।।

देंहियाँ होई कमजोर, बढ़ी बीमारी कऽ जोर।
जगवा में हो जाई शोर, बही अँखिया से लोर।
घरवो में ना रहि जाई, कवनो आब बालम।। रोटी ना ...

कहलऽ चुनरी रंगाइब, तोहका झूलनी गढ़ाइब।
गीरलऽ घरवा छवाइब, तोहका रानी हम बनाइब।
तोहरा बतिया क मांगीलाँ, जबाब बालम।। रोटी ना..

जवन कइल तवन कइलऽ अब ई छोड़ बुरा काम।
तोहरा जिनिगी क हउवे, साजन अनमोल दाम।
तुहीं देशवा क हउवऽ, आफताब बालम।। रोटी ना...

हमके काहें दुरदुराइलाँ कूकुर जानि के।
काहें राह से हठाईलाँ बबुर जानि के।।

हमरे खाई के कमाई, गइलीं भँइसाअस मोटाई।
राऊर भरल खजाना, हमके मिलल न पाई।।
काहें जुलुम करीलाँ ई, मजूर जानि के।। काहें राह.

सबके थारी में खियवलीं, हमके परई मँगवलीं।
सबे तोशकऽ लगवलीं, हमके बोरा पर सुतवलीं।
काहें दिलवा जराइलाँ, कपूर जानि के।। काहे राह..

मंदिर-मस्जिद बनवलीं, महल-सड़कऽ सजवलीं।
तरे जाई के पताले, हीरा-मोती हम निकललीं।
तबो आप लतिआइलाँ, बेलूर जानि के।। काहे राह.

जागऽ शोषित मजूर, दूखवा तबे होई दूर।
हउवऽ लूट क शिकार, नहीं भाग कऽ कसूर।
तोर अब ई गुलामी, बीर शूर जानि के।। काहें राह....

तोहरो पसीना गगांधारऽ तनि चेतऽ ना ललनवाँ।

तोहरे जँगरवा से बिहंसे अटारी,
तोहरे से चमकेला चुनरी आ सारी।।
जगवा के दिहलऽ सँवार हो।। तनि चेतऽ....

तोहरे पसीनवाँ कऽ मोल हउवे भारी,
तबो तु हूँ सुनेलऽ बड़कवन कऽ गारी।
तोहसे खिललऽ कचनार हो।। तनि चेतऽ...

कोखिया कऽ लाज देइ खूनवाँ बचवलऽ।
धनवाँ बचवलऽ धरमवाँ बचवलऽ।
खइलऽ तू हमरा बदे मार हो। तनि चेतऽ...

जाइके पताले हीरा-मोतिया निललऽ।
तवनोंपर नाहीं भरऽ पेट रोटी पवलऽ।
महिमा बा तोहरो अपार हो।। तनि चेतऽ...

तोहके चमार कहें देखऽ जमींदरवा।
तोहरे के लूट बनलऽ सेठ सहूकरवा।
तोरहे से कजरी-मल्हार हो।। तनि चेतऽ...

लाल ''इकबाल'' तू बनाव अब टोलिया।
केतनों चलावे दुश्मन तोहरा पर गोलिया।
तबे होई सपना सकार हो।। तनि चेतऽ...

खइला बिना डँहकावे, जमामार जुलुमी।
हमके जीयते मुवावे, जमीदार जुलुमी।।

दिनभर खेत-खरिहान में खटावे।
चाक अस सांझ आ सबेरे उ नचावे।
पइसा रहलो पर ना देला पगार जुलुमी।। हमके...

भाई से लड़ाके हमके जेल भेजवावे।
भाई-भउजाई से बेगारी उ करावे।
देहलस हमनी क घरवा उजार जुलुमी।। हमके...

सिलिकऽ साड़ी अपना मेहर के मंगावे।
अपना के कोट-पैन्ट, टाई बनवावे।
कइलस हमनी कऽ देहियां उघार जुलुमी।। हमके...

हमरे शरमवा से सोना अउरी चानी।
हमरे से चमकेला, दिल्ली रजधानी।
हमके कहेला उ डोमवाँ-चमार जुलुमी।। हमके...

बाबा भीम राव कऽ मानलऽ कहनवाँ।
पूरा होई तबे शोषित तोहरो सपनवाँ।
तबे देश छोड़ भागी ई हुंड़ार जुलुमी।। हमके...

माई रे माई ई दुख हमसे ना सहाई रे माई।-२
केहू के महल बाटे केहू के अटरिया।
हमनी क बाटे बस टुटही झोपड़िया।
कइसे के दिनवाँ, ओराई रे माई।। माई रे माई ....

फटही लुगरिया बा तोहरो बदनियां।
सरिया पर सरिया बा कहू क दुकनियाँ।
मन करे अगिया, लगाँई रे माई।। माई रे माई...

केहू मलपूवा चाभे, केहू मरेला।
तोहरो ललन आज भूखहीं सुतेला।
बागी मन करे बनि जाँई रे माई। माई रे माई...

पापीयन के ओटवा दे, हँमही जितवलीं।
भगिया आपन हम, अपने मेटवलीं।
नाहीं जनली सभई भुलाई रे माई।। माई रे माई...

जब जगींह देशवा क सुतल जवनवाँ।
तब अइह देशवा में बिहनवाँ।
कहं''इकबाल'' समुझाई रे माई।। माई रे माई...

नाहीं होला पेट भर कमइया हो भइया।
ए ही देशवा में हमनी क बाटे काहें दुटही पलानी।

हमनी के नाहीं मिलेला दाना-पानी।
शासन भइल बा कसइया हो भइया, एही रे देशवा में।। नाहीं..

हमहीं पहाड़ काटि सड़क बनवलीं।
खँइया के पटलीं धरतिया सजवलीं।
देख तबो होला दुरगतिया हो भइया, एही देशवा में ।। नाहीं...

देश क लुटेरवन क देशवा में रंग बा।
हमनी क खटलो पर सतुआ महंग बा।
हमनी के नइखे दवइया हो भइया, एही रे देशवा में।। नहीं...

हमरे कमाई लागल आकरा मोवारी।
कइलस कंगाल देहलस घरवा उजारी।
देखी-२ आवेला रोवइया हो भइया, एही रे देशवा में।। नाहीं...

सगरो छिटाइल बा, हमरे कमीनी।
दूध पीये दुश्मन हमार हक छीनी।
होत बाटे हमरो संसतिया हो भइया, एही देशवा में।। नाहीं...

बसपा, भजपा आ कांग्रेस सपाई।
करनी पर आवेला इनका रोवाई।
इनकर शासन सवतिया हो भइया, एही देशवा में।। नाहीं...

नाहीं भगवन मथुरी कटीहँ अफतिया।
चेत महेन्दर ना त सहब संसतिया।
होई जइब धान कऽ तु पइया हो भइया, एही रे देशवा में।। नाहीं...

सपना भइल सब सोचल बतिया, कइसे के होई सुधार।
सँउसे किरीनियाँ महलिया में बाटे, झोपड़ी में बाटे अन्हार।
हो साथी कइसे के होई सुधार।।

झुठिये बा ओढ़ना, झुठिये बा बिछावना, झुठके भइल बा महान।
झुठके क सिरवा पर सेहरा बन्हाता, बाहरे इ हिन्द क विधान।
सँचका का मुँहवां सियाइल बाटे, जनता का फूटल लीलार।।
हो साथी कइसे ...

पितर थरीयवा में दूध पितरीयाइल, मन्ठा क पूछ मति हाल।
जेकरा के दुधवा पियाइ दिल्ली भेजलीं, उहें भइल जिउवा क काल।
सत्ता थरियवा में संगी पितरीयाइल, केकर करीं अब गोहार।।
हो साथी कइसे...

हमरे जँगरवा से धरती फुलाइल, जगवा के दिहलीं सँवार।
सुखवा ना जनली आ दुखवा में बीलता, अजूवो ई जिगनी हमार।
भूखले-पिअसले आ फटही लुगरिया में, धनी कइली तीज-तिहवार।।
हो साथी कइसे...

जागऽ हो जवान जागऽ आंख खोल देखऽ शहीद करेलँ पूकार।
नाहीं चली देशवा में दस क अब शासन नब्बे हो जा तूं तइयार,
इकबाल तोरि द गुलामी क जंजीरवा, बनि जा तू अब अंगार।।
हो साथी तबे होई देश के सुधार।।

गजल

पूछेले पुतरिया पुतरी से, अंखिया क रोशनियाँ का भइल।
चनवाँ त उहे चनवाँ बाटे, चनवाँ कऽ चँदनिया का भइल।

हम रोज रटी दादी-दादी, दादी क रोज बखान करीं।
दादी क अँचरवा पूछता, बबुनी क ओढ़नियाँ क भाइल।।
चनवाँ त उहे.....

ह साँच बराबर तप नही, परहित अस धर्म न दूजा हऽ।
सम्वाद याद बा एक्टर कऽ अमृत बचनियाँ का भइल।।
चनवाँ त उहे.....

सुनली कुरआन-पुरान बहुत, मंदिर-मस्जिद अंगनइया में।
भाषन सुनली हम घर-घर में, पुरखन क चलनिया का भइल।।
पिये के हीरोईन गाँजा त सीना में जोर बहुत बाटे।
जे देश के खातिर सिर देदे अब वइसन जवनियाँ का भइल।।
चनवाँ त उहे.....

हियरा में हुक उठे तड़पे परनवाँ।
कारगिल में जबसे गइलँ हमरो सजनवाँ।

जब से पिया मोर सीमवा पर गइलँ।
याद में उनकर हमार देह पियरलँ।
आग अस जरावेला बरखा सवनवाँ। कारगिल..

भाई से भाई क होता लड़ाई।
बैरी दुश्मन देहलस अगिया लगाई।
भाई काटे ला भाई क गरदनवाँ।। कारगिल...

दुनूँ ओर से चलत आटे सन-सन गोली।
केतनन क बिख भइल ईद अउरी होली।
दुनूँ ओर नेता लोग देताऽ भषनवाँ। कारगित...

दुनूँ मलिकवन क कट ताटे चानी।
हमनी क खून बहे, जइसे के पानी।
जालिम भइल बाटे, बैरी शसनवाँ। कारगिल...

मांग धोवताऽ ममता चिल्लाताऽ।
भाई खातिन दुनु ओर प्यार फिफियाता।
''इकबाल'' से जाने कब होई मिलनवाँ।। कारगिल...

गजल

बगिया लागावल नेह क देख उजर गइल।
पँक्षी न जाने प्रेम कऽ, पोषल केहर गइल।

उठल बयार बर कऽ गुलशन में, एह तरह।
हलात उ सुन-सुन के, रोंवा सिहर गइल।। पक्षी...

जीयते उ माई-बाप त, मुउला समान बा।
जेकरा जवान बेटा क, गरदन उतर गइल।। पक्षी...

छन में ओ सोहागिन, क सपना तँवाँ गइल।
जेकर सिंगार लहकत, आगी में जर गइल।। पक्षी..

सींचल रहे खेती जवन, बापू के खून से।
धिक्कार! तोहके बा, जब उ साँढ़ चर गइल।। पक्षी..

एइजा खोजलो पर नाहीं मिले काम भाई जी।
गाड़ी जिनिगी कऽ हो गइल बा, जाम भाई जी।

हमरा सोना अस बचवन के रोटी ना मिलेला।
उनकर दूध-घी पीके कुक्कुर कार पर घुमेला।
उनका कुक्कुरा के लागेला, हमाम भाई जी।। गाड़ी...

उनकर बुढिया भइल खाके देख चकुनी हाथी।
हमरा मेहर क खटत-खटत भइल खांसी।
झूल गइल जवनीये में, चाम भाई जी।। गाड़ी...

बिना खटके चाभेला, केहू मुर्गा-मलाई।
रूइला बिना काल्ह फेकनी कऽ मर गइल माई।
जियते जिनिगी भइल बा हराम भाई जी।। गाड़ी...

कइसन आइल इ अजादी घर कऽ भइल बरबादी।
कहे दे गाँव-गाँव जूझे बदे, अब तू मुनादी।
दुश्मन से लेवे के पड़ी, इन्तकाम भाई जी।। गाड़ी....

झगरा साँझे क करत-करत भोर करेली।
रोजे सास पतोह तोर-मोर करेली।।

कबो तेल खातिर लड़स, कबो नुन खातिर लड़स।
माँग तोर धोवाजा कहिके, साँढ़ अस हँकड़स।
मार कछनी इ रोजे जइसे जोर करेली। रोज....

झगरा अँगना में करत-करत गली में आ जाली।
लाग जाला मेला जब इ दुनूँ जानी बउराली।
हुलसाइल जियरा मरदन क थोर करेली।। रोज...

बाप दादा परदादा तक के, गारी खूब देली।
एक जानी बेलना, दुसर जानि मूसर लेइ लेली।
जइसे परमाणु परिक्षण रोज-रोज करेली।। रोज...

जाने कब एक जानि सासु जी के माई मनिहँ।
सासू जाने कब पतोह जी के आपन बेटी जनीहँ।
दूनो जानि घर क नीव कमजोर करेली।। रोज...

शोर इज्जत क धोवाता, कुछ न मरदन के सोहाताऽ।
झगरा से दूनू जानि के "इकबाल" घबड़ाताऽ।
पीरा बलिया से इ अपना पोर-पोर करेली।। रोज....

हिन्द क नारी होके काँहे घबराइब।
नइहर न जाइब विपत ससुरा गँवाइब।।

पंडित जी पियवा से गाँठ जोड़वाये।
डोलिया चढ़ाके बाबू ससुरा पठाये।
ससुरा के करनी से सरग बनाईब।। नइहर...

ऊँच लीलार देख, सिर नाहीं फोरब।
सास-ससुर सँइया जी से नेह जोरब।
बाप क पगरी नाहीं ससुरा डूबाइब।। नइहर...

कबो सुखाला ताल, कबो भरि जाला।
ओहि तरे सुख-दुख आवेला आ जाला।।
नेह ना तोरब उनसे अउरी बढ़ाइब।। नइहर...

खेत जे उजरलेबा उहे खेत बोई।
आशा बा न सँइयां जी से ऊँच-नीच होई।
रूसल पियवा के कइसहूँ मनाइब।। नइहर...

जग जाने अंगुलीमाल छोड़लँ हतियारी।
बिगरल बाल्मीकि, बन गइलँ पुजारी।
बिगरल पियवा के, हम समुझाइव।। नइहर...

जीवन परदेशवा में कइसे के बितावतनि।
जीवधनि कइसहूँ के आपन जियावतनि।।

जड़वा में रात ड्यूटी काँप के बिताइलाँ।
खएका पकाँई कबो भूखे रहि जाइला।
का लिखी, का ओढ़त, का हम बिछावतानि।। जीवधनि..

पढ़े भेजहि बचिया के, ओके खूब मनिह।
हमरा माई-बाबू के अपने तू जनिह।
तोहनी लोगे खातिर एइजा कुलऽ दुख उठावतनि।। जीवधनि..

रहे के न एइजा कवनो आपन मकान बा।
टमपरउरी ड्यूटी क न कवनो ठेकान बा।
पेट काटि-काटि कऽ थोरे रूपिया पठावतानि।। जीवधनि...

किरिया खाइल धनि आपन निभइह।
आधा पेट खइह जनि इज्जत लूटइह।
चिठियो से आज फेनू किरिया धरावातनि।। जीवधनि.

जइसे जरेला धनिया तेल बिना बाति।
ओइसे जरेलऽ "इकबाल" दिन राती।
बतिया तोहार एइजा हमीहूँ निभावतानि।। जीवधनि...

गजल

जेके आपन गियान हो जाला।
उ हे मानव महान हो जाला।

दियना विश्वास क बुताला जब।
जियते मुवला समान हो जाला।। जेके आपन..

जग ई मरघट समान लागेगा।
घर जब आपन वीरान हो जाला।। जेके आपन...

मोम से भी इ दिल मुलायम है।
बात क भी निशान हो जाला।। जेके आपन...

कबो कबो हवा क एक झोका।
जइसे आँधी-तुफान हो जाला ।। जेके आपन...

सइयां केतना सहीं सँसतिया, हमके सभे सतावेला ।।
भोरे घर-बासन कइके जल्दी से बनाई खाना।

तबो सासजी रहि-रहि के हमके मारेली ताना।
ताना सुनि-सुनि फाटे छतिया, एइजा सभे सतावेला।।
सइयां केतना...

ननदी कहे की नइहर से कुछ ऊ ना लेके आइल।
सिहनी भइल बा एक सँइया जी एइजा पीयल-खाइल।
नइखे बीतत दिनवा रतिया, दिलवा सभे जरावेला।।
सइयां केतना..

लेहनो लियावे ए सँइया जी हँमही सिवाने जाँई।
संगवा ससुरजी क ए सँइया कटीयो हम कटवाई।
एतनो पर होता दुरगतिया, हमके सभे रोवावेला।।
सइयां केतना...

फिंरिर्गी अस हमरा के ए सँइयां जी सभे नचावे।
बात-२ पर देवरा हमके रोजे, मारे धावे।
जिनिगी जइसे भइल सवतियां, हमके सभे नचावेला।।
सइयां केतना ...

सँइयां जी अब त फाट गइल बा देहल तोहार सारी।
मन बैरागी होत बा बाकी जाँई केकरा दुवारी।
नइखे केहू अब संघतियां, जियरा सब छछनावेला।।
सइयां केतना...

के के आपन भला कहल जाई।
केकरा पर अब जियल मरल जाई।
जियते घर जे आपन लुटा देहलस।
कइसे मालिक ओके कहल जाई।। केकरा...

चोर घर में खुदे घुसावत बा।
पाठ उल्टा हमें पढ़ावत बा।
गोली चलवावें हक उ मँगला पर।
जुल्म कब तक भला सहल जाई।। केकरा...

हाथ आपन कटा के का पवलऽ।
बारी-बारी तू घाटे कुल्ह धवलऽ।
साँढ़ सभई क खेत चर देहलस।
बोल कइसे के अब जियल जाई।। केकरा...

डाँस इंगलिस खुदे करावत बा।
तोहके हिन्दी पढ़े, बतावत बा।
पढ़लो पर तोहके नोकरी ना मिलि।
कइसे जिन्दा भला रहल जाई।। केकरा...

चानी काटता, खाता रसगुल्ला।
दूध से रोज उ करे कुल्ला।
कुल्ह अमृत बटोर लेहलस ऊ।
खाली कइसे जहर पियल जाई।। केकरा...

देशवा में अब नाहीं चलि मनमानी।
जागलऽ देसऽ सगरो ओर जवानी।।

आपन काम तू ठीक से करऽ, केहू से जनि डरऽ।
इज्जत आपन अब मत बन्हकी केहू हाथे धरऽ।
जाहिल काहिल बन जनि बइठ, भइया अब तू चुहानी।। जागल.

लइका-लइकी खूब पढ़ाव, घास तु जनि गढ़वावऽ।
शिक्षित अउरी संगठित होके अब संघर्ष बढ़ावऽ।
तोहरो बगिया महके लागी, खुश होई सब परानी।। जागल...

सबकर खून इ लाले हउवे, केहू क नाहीं करिया।
सबके भाई सब केहू जाने, अइसन उठाव लहरिया।
एही मे सबकर बाटे भलाई अबो हो छोड़ नदानी।। जागल...

केहू खातिर काँहे केहू भइया बनी कसाई।
एइजा सब ह भारतवासी सबकर एके माई।
पानी पानी हो जइहँ, उहो जे उठी-उठानी।। जागल...

हो ओ-ओ-ओ प्यारी सखी।
जाने कइलीं मो कवन बिगार।
सखी हो जिनिगी भइल मोर भार।। होऽ प्यारी...

बाबू क जिनिगी बन्हकी रखाइल।
माई क मंगल सुत्र बेचाइल।
छूट गइल भइया क पढ़ाई।
हो ओ प्यारी सखी तबो ससुरा माँगेला मार्शल कार।।
सखी हो...

अब बाबू क नइखे पइसा।
माई क लउके कुछ ना रस्ता।
भइया क जिनिगी भइल खराब हो प्यारी सखी।
भउजी मारेली मेहना हजार हो।। सखी हो....

खुशी-२ सब डोली चढ़ावल।
सुसुकी-२ के सब समझावल।
सास ननद क हाल न पूछ हो प्यारी सखी।
सइयो कइलस ना तनिको दुलार।। सखी हो...

संइया बैरागी कहवाँ रहीं।
भउजी क केतना मेहना सही।
बाबू कहाँ से कार लिअइहँ हो प्यारी सखी।
भावे अब नाहीं सवख सिंगार। सखी हो....

आज नाहीं त काल्ह होई भरपाई, तोहरा आगे आई।
जइसन तू करब कमाई, तोहरा आगे आई।।

बाजू क ताकत पर तू एतना जनि तनऽ।
गामा क हाल तनि ठीक ठीक जानऽ।
अरे मुँहवा पर माछी भिनकी तबो ना हँकाई, तोहरा आगे आई।।
जइसन तू करब...

लूटऽ बेढ़ऽ केतनो आज काट चाहे चानी।
लेके नाहीं जइब सुनल एको चित्ति कानी।
पापी क किरती कवोनो पुन ना कहाई, तोहरा आगे आई।।
जइसन तू करब...

बगली में छूरी ऊपर राम-राम रटबऽ।
सुनल तू बोइब जेवन उहे काल्ह कटबऽ।
देवता-पितर केहू काल्ह होई ना सहाई, तोहरा आगे आई।।
जइसन तू करब...

का लेके आइल बाल का लेके जाइबऽ।
शान्ति तू धन दउलत से ना पइबऽ।
माटी क देहिया दुनिया जारी-दफनाई तोहरा आगे आई।।
जइसन तू करब...

घरिला इ पाप क कबो ना कबो फूटी।
जुलम क लाठी जरूरे कबो टूटी।
डहकी उहो जे दुसरा के डँहकाई, तोहरा आगे आई।।
जइसन तू करब...

हउवे कइसन इ सुराज, एमे राज लागताऽ।
बतिया हमके कुल बताव हो बलमूआ, एमा राज लागता।।

हमनी क काहें बाटे टुटही पलानी।
हमनी के नइखे मिलत दाना-पानी।
हमसे कुछउ जनि छिपावऽ, एमा राज लागता।। बतिया..

उनकर बेटा-बेटी पढ़ेलँ विलायत।
हमनी के फीस भइल एइजे क आफत।
हमके उल्टा एइजा कुल्ह साज-बाज लागता।। बतिया..

हमनी क बाप-दादा करेलँ गुलामी।
अजुबो-बीतेले जिनिगी करते सलामी।
हमरा जियरा में देखि-देखि आग लागता।। बतिया..

हमनी के काहें बाटे एतना परेशानी।
केहू चाभता रबड़ी केहू काटे चानी।
सँइयां अगहर चिरइन के बाज लागता।। बतिया..

आपन सुधारऽ पिया बिगरल रहनियाँ।
लउट के आई ना दुबारा इ जवनियाँ।।

रोजे सबेरे-साँझ भट्ठीये पर धावेलऽ।
का जाने का माजा दारूवा में पावेल।
कहिके पियक्कड़ दुनियाँ करेले बेपनिया।। लउट..

पीके शराब सँइया लेल तूत लहरा।
कबजे खटीं, पिया घरे अउरी बहरा।
फाटल बेवाई करत-करत सोहनिया।। लउट...

कइसन मरद पवलू कहे सब घिया।
अब से तू बुरा काम कर जनी पिया।
बेच देहल दारू खातिर नाक क नथनिया।। लउट...

सिमवा पर के करी पिया रखवरिया।
केकरा से खिली पिया घर क फुलवरिया।
ढ़ेर दिन चली नाहीं, राउर फुटनिया।। लउट....

तोहरा राज में बिजूलिया भइल जीव क काल।
सभे परेशान बाटे, सभे बा बेहाल।। भइल..

झलक देखाके कबो जाने कँहाँ जाले।
हप्ता-महीना जनता खोजत रहि जाले।
मजूर किसान तँग बड़का मारे माल।। भइल..

फसल सुखा चाहे पानी बिना मरऽ।
लेके बाल-बच्चा लहकत गरमी में जरऽ।
जनरेटर वाला तोहार का जानी हाल।। भइल...

बिजूली भले ना आई बिल बाकी आई।
एकरा अधिका का होला बेहयाई।
साँसत तु सहब कबले, कर कुछ खियाल।। भइल...

मँहगा तोहार रेट काँहें उनकर सस्ता।
काहें दुरस्ता रही काहें दुर व्यवस्था।
इनके सुधार बदे, मचावऽ अब बवाल।। भइल...

तोहके परेशानी बा नेता क बाटे चानी।
लाइन लगा के बल्टी खोजऽ सूबे पानी।
नेता लोग तबो भइया, बजाव तलँ गाल।। झलक..

वोटसे ना बदली कर, चोट अब भारी।
नाहीं त चलत रही गरदन पर आरी।
मुक्ति क ''इकबाल'' हउवे इ सवाल।। भइल...

गजल

एहसास मर गइल बा, जिंदा शरीर बाटे।
धुँधला गइल बा अक्षर, खाली लकीर बाटे।।

नफरत शबाब पर बा, बाकी हजार गम बा।
मन में मलाल बाटे, अंखियन में नीर बाटे।।

सोना आ चानी हीरा मोती, पर जनि तू अँइठऽ।
कल जे रहे बहुत कुछ उ हो फकीर बाटे।।

सरताज कबो रहलीं रहली, हम सबसे आला।
आला से अदना भइली, मन से इ पीरबाटे।।

इंसान जवन बोई, उहे ऊ काल्ह काटी।
एह बात क दुनिया में लाखों नजीर बाटे।।

"इकबाल" सब लुटाके तूँ घर जवन बनवलऽ।
ओही में चोर घुसके, अब खात खीर बाटे।।

हमरा माँगि क सेनुरवा रहे न रहे।
पिया माई क दुधवा क लाज रखीहिं-२

जेकरा गोदी लोट-पोट के तू जवान हो गइल।
जेकर कवरा खा-खा के सँइया सयान हो गइल।
कबो ओकरा पर न आवे आँच याद रखीहि।। पिया..

खून तू आपन दे के सँइया दूध क कर्ज चुकइह।
माई क एहसान सिपाही बनि जनि तू विसरइह।
गँउवा, घरवा आ देशवा क नाज रखीह।। पिया...

माई क खींचल चाहेला दुश्मन बेशरमी अँचरा।
आँख निकाल के रखि दीह जे पहुँचल चाही पँजरा।
सँइया लड़े खातिर हरदम रियाज रखीह।। पिया...

प्राण जाये पर बचन न जाये इ इयाद तू रखिह।
सीना पर गोली खइह तबो जनि पीछे भगिह।
मरते दम तक याद एतने सरताज रखहि।। पिया..

हमका बात समुझ ना आइल।
केहू छछने रोटी खातिर, केहू चाभे मलाई।।

कहू क अनभल ना चहलीं।
विपत अपार उमर भर सहलीं।। हमका बात ...

देवता, पीतर खूब मनवली।
केहू न भइल सहाई।। हमका बात ....

गर्मी जाड़ा सुबह-शाम दुपहर ना जनली।
खटत-खटत देहिया झउसाइल।
पैर में फटटा बेवाई।। हमका बात ....

मुल्ला-पंडित ओझा-सोखा।
सभई देहलस हमके धोखा।।
दवा बिना बबुआ बेहाल बा।
कब ले होई ओझाई।। हमका बात ....

केकरा-केकरा पीछे जाँई, फेकल जूठन कबले खाई।
रस्ता नइखे अब कुछ लउकत, मारे जान महँगाई।।
हमका बात ....

भोर भइल, उजियार भइल बा ना, घर आपन गुलजार भइल।
आधा उमर रहल केकरा संग, इ अजादी हरा गई।।
हमका बात ....

दिन इ जिनगी के लमहर ओरात नइखे।
का करीं हमके कुछउ बुझात नइखे।।

पढ़लीं की पढ़ला पर मिल जाई नोकरी।
बाबूजी क पइसा से भर जाई धोकरी।
बोझ बाबू से अब सम्हरात नइखे।। का करी...

जोग्यता हलुक भइल सोरस-घुस भारी।
कवनो जोगाड़ नइखे फइलल महामारी।
कम्पटीशन क किताब अब किनात नइखे।। का करी.

कवन मुँह लेक गाँव-घरे अब जाइब।
अनपढ़ माई बाबु के कइसे समझाइब।
सोच-२ लोर आँख क सुखात नइखे।। का करी..

अस मन करे बैरागी बनी जाई।
मटिठया पर जाके कहिं धुनिया रमाई।
माई बाबू खातिर असरा देखात नइखे।। का करी...

काम जग में जे परमारथ क करी।
आज नाहीं त काल्ह ऊ पूजइबे करी।।

जे जइसन करी, जे जइसन रही।
जइसन करनी बा ओइसन गवइबे करी।। आज...

कवनो दुर्बल सतवला से का फायदा।
घरे केहू क जरवला से का फायदा।
आज डर से भले केहू कुछ ना कही।
काल्ह पापी त पापी कहइबे करी।। आज...

दर्द दुनियां में जे गैर खातिर सही।
आदमी में अगर आदमीयत रही।
गम क केतनो भयावह अन्हरिया रही।
ऊ त जुगनू नीयर जगमगइबे करी।। आज...

जेके दुनियां न जाने का-का कहलाऽ।
दुनियां में दर्द जे गैर खातिर सहलाऽ।
नाम "पोतन" जगत में अमर हो गइला।
आज श्रद्धा सुमन सब चढ़इबे करी।। आज...

देश दुनियाँ बचाव, अगर हो सके।
स्वर्ग जइसन समाव अगर हो सके।
नीतऽ नफरत क एक दिन बवँड़र उठी।
जे में "इकबाल" सभई बिलइबे करी।। आज...

सारी फेंक के चड्ढ़ी अउरी चोली पर लोभइलू।
अररर इका कइलू हो बबूनी इ का कइलू।।
तनिको ना तू शरमइलू, अररर इ का कइलू।।

लक्ष्मी, दुर्गा रहलू तूँही तू रहलू रणचण्डी हो।
थोरे-थोरे पइसा पर तू बीच बजार बिकइलू।
अररर इ का कइल....

चाहे बचाव इज्जत आपन, चाहे तू बिलवाव हो।
चाहे आपन देंह तू भुख्खल कुक्कुर से नोचवाव हो।।
ना कइलू थोरे में गुजारा देख के जग बउरइलू।।
अररर इ का कइल....

परदा नारी का कहला, इहे त हम जानिलाँ।
हाल इ तोहार देख देख के मनही मन सोचिला।
अपना करनी से ए बबुनी खुदे तमाशा भइलू।।
अररर इ का कइल....

बनऽ द्रोपदी दावा बा केहू कृष्ना आ जाई।
बीच सभा में केहू न केहू आइके लाज बचाई।
काहें तू "इकबाल" क नीको बतिया पर कोहनइलू।।
अररर इ का कइल....

शासन भइल बा कसइया हो।
भइल जीयल मोहाल।।

कइले बा देख विदेशीयन से यारी।
ऊपरा से बनल स्वदेशी पुजारी।
बेच दहलस घर अँगनइया हो।। भइल...

हत्या आ लूट त रोजे सुनाता।
केतना बहिनीयन क इज्जत लुटाता।
नइखे केहू अब सुनवइया हो।। भइल...

मजा मारे बड़का आ छोटका बन्हाता।
छोटके से सरकारी करजा वसुलाता।
ब्याज बढ़े डेढ़ा सवइया हो।। भइल...

अपराधी-हत्यारा भइल मनीस्टर।
करे के बा इनकर दवइया हो।। भइल...

तोहरा पर लागता एक्ट गैंगेस्टर।
बड़का सिलिंग, बंजर परती हथिअवलस।
तोहरा के कागज क नइया थमवलस।
सउरी में होता ओझइया हो।। भइल...

चूवे बरखा में हमनी क ओसरिया ए बलम जी।
जाइल जाई केकरा अब दुवरिया ए बलम जी।।

केहू अमरीका घूमे केहू बिलायत।
रोजे करेला केहू केतना नफासत।
हमके नइखे सरिया तोहके नइखे चदरिया ए बलमूजी।।

अजूवो बा हमनी क टुटही पलानी।
दुखवा मे बीतताटे अबो जिदंगानी।
तड़पे केतना बबुआ अजूओ केतना गुजरिया ए बलमूजी...

तोहसे पढ़ाई क फीस ना दिआई।
नोकरी बेचात बाटे तोहसे ना किनाई।
चारू ओरिया छवलस देख गम क बदरिया ए बलमूजी...

केहू कहाला दानी केहू महादानी।
हमनी क के राखी सँइयां हो पानी।
तोहरे पर लागत बाटे, हमरो नजरिया ए बलम जी..

पतियो ना पठवेला सखी हो सजनवाँ।
उदास लागेला हमके घरवा अँगनवाँ।।

आँवा असजरे सुनली बम्बई शहरिया।
गोलिया चलावे केहू, केहू तलवरिया।
सुनी-सुनी तड़पेला, मन के हिरनवाँ।। उदास...

घरवा में अन्न नाहीं, न तन पर बसनवाँ।
सँझवत देखावे बदे, नइखे किरसनवाँ।
भूखल नइखे सूतत हमार छोटका ललनवाँ।। उदास ....

बचियो बेमार बाटे, बड़को बेमार बा।
वैद्य जी बतावस भइल, तीजरा बोखर बा।
कइसे दवाई बिना वची अब परनवाँ।। उदास.....

आई घरे मालिक, काल्ह देत रहलँ गारी।
करजा क खातिर दिहलं, एक लात मारी।
कइसे बचाई हम, इज्जत क गहनवां।। उदास....

धार दियवाके रखले बानी हम कटारी।
पीक जब शराब मालिक अइहँ देब मारी।
थाना पुलिस चाहे हमके भेजी जेहलखनवाँ।। उदास....

गरमी सहे ल तूँही जाड़ा सहेलऽ, बरसात बबुआ।
तबो दुखवा क दिन ना ओरात बबुआ।।
सुरूज से पहिले तूँही खेत पहुँचे लऽ।
बनके बहार तूँही खेत में उग लऽ।।
माटी में मिलि गइली तोहरी जवानी फिफियात बबुआ।।
तबो दुखवा.....

तोहरे बहिन माई करेली रोपनियाँ।
पेट कारन बन गईल तुँहऊ नचनियाँ।।
तिरिया तोहार तबो साड़ी बिना देख रिरियात बबुआ।।
तबो दुखवा.....

पी-पी के खून तोहार दुश्मन मोटाता।
नचका दवाई बिना देख दुबराता।
तोहरे कमाई लूट बड़का हो खाला दाल भात बबुआ।।
तबो दुखवा....

तोहरा से होता देख मीठी-मीठी बतिया।
सभई कहेला तोहार हँई हम सँघतिया।
खाद पानी बिना तबो मथुरी कऽ खेत बा सुखात बबुआ।।
तबो दुखवा.....

कफन कऽ सेहरा जब माथे बन्हाई।
तबे महेन्दर दुश्मन बील में समाई।
धर्म क बांध तोड़ऽ-तोड़ऽ तू अब जात पात बबुआ।।
तबो दुखवा.....

तोहरे पसीना महके, जग कऽ कोना-कोना।
माटी सोना हो गइल।
छुअलऽ मटिया क लोना, चानी सोना हो गइल।।

धरती अकासे-पताले तोहार चिन्हा।
हीरा-मोती तोहरे से तोहसे नगीना।
तोहरा जाँगर के न लागे जादू-टोना।
माटी सोना हो गइल।
छुअलऽ मटिया.....

सगरो छिटाइल बा तोहरे कमीनी।
सूत नाहीं पावऽ कमवा से भर नीनीं।
रोटी खातिर छछने तोहार बबुआ सलोना।
माटी सोना हो गइल।
छुअलऽ मटिया.....

कटलऽ पहार अउरी खंइओं तू पटलऽ।
छोट जान रहे तब्बो रात दिन खटलऽ।
तब्बो हई गरीबी कऽ बा रात दिन रोना।
माटी सोना हो गइल।
छुअलऽ मटिया.....

दिन भर खटलो पर पेटवा भरत नइखे।
भूखल सोना अस सुगनवाँ सुतत नइखे।।
लरिका दिनभर चरावे उनकर भँइस अउरी गइया।

दिनभर करीं हरवाही तबो धान मिले पइया।
रास्ता दिनवे में भूख से सूझत नइखे।। भूखल ...

खटलन बाप, दादा, भाई खटली बहीन अउरी माई।,
घर से निकसी खटेलीं, दुलहिन अउरी भउजाई।
दिनवा सुखवा क तबो बहुरत नइखे।। भूखल ....

माँगी जब हम मजूरी मालिक लेला तरियाई।
देख बिटिया सयान संग करे बरियाई।
पाप कइलो पर पापी र डरत नइखे।। भूखल ....

देश भइल बरबाद, पइसा वाला बा अजाद।
कइसन आइल इ सूराज, भइल पुलिस-गुण्डाराज।
बड़का छोटका क दुखवा बूझत नइखे।। भूखल ....

दुखवा सहलीं अपार, नाहीं लउकत सुखक द्वार।
हकवा छीने खातिर भइया, हो जा अब तइयार।
शाषित उनके अब सुधारी, जे सुधरत नइखे।। भूखल....

जियान जिन करीं रंग खूने बा सस्ता।
रेत देहीं गरदन बचे क बा रस्ता।।
जियान.....

देखल जो चाहीं तऽ कश्मीर जाँई।
मिलके आतंकी सगें सरधा पूराईं।
जहवाँ बहेला लहू बीच चौरस्ता।।
जियान.....

बिहटा, आ बारा आ बाथे निरेखीं।
सगरो-बिहार जाके दिनवें में देखीं।
लालू चाभसऽ रबड़ी जहाँ मर्द मस्ता।।
जियान.....

गुजरात हाले भइल रहे होली।
धरती भइल लाल, लाल लहँगा चोली।
भूँज-भूँज माँसे क भइल रहे नस्ता।।
जियान.....

सगरो क इहे भइल बा कहानी।
काहे मिलाई लाँ रंग अउरी पानी।
छोड़ी पित्तर कीनल सस्ता बा जस्ता।।
जियान.....

सररर सररर आपो अब बोलीं।
सइयाँ इकबाल चाहे चला देहीं गोली।
बनि जा पिया तूहूँ ठग कउनो हँसता।।
जियान.....

पीयल गाँजा मोर राजा कहीदऽ अबसे हराम।
तोहरा जिम्मा अबहीं घरवा में बहुते बा काम।।

देख-देख हर्षित होखेलीं सब सखिया।
सोना अस आपन ललन।
बाँझ अस कोखियां बा आज तक आपन।
रहि-रहि बरसे नयन।
अब्बो ले तनिका दरद सँइया बूझी।
बिनती करीलां सुबहो-शाम।। तोहरो जिम्मा.....

अबहीं त देखऽ बा टूटही पलानी, सगरो बा अबहीं अन्हार।
गवना कराके तूँ जब से लियलऽ, ना जनलीं का ह बहार।
एही नवइनीये में साँस फुले लागलऽ।
झूल गइलीं देंहिया कऽ चाम।। तोहरो जिम्मा.....

बूढ़ भइलँ माई बाबू थाक गइल जाँगर।
तनिका तू करऽ बिचार, इनकर करे के बा अबहीं परवस्ती।
नाहीं त हसीं संसार, मान ल बचनियाँ सुधार लऽ रहनियाँ।
ऐ पर लगावऽ अब लगाम।। तोहरो जिम्मा.....

तोहरा पियाई कऽ मेहना मारेला, टोला परोसा आ गाँव।
सुनी-सुनी फाटेला आपन करेजा,हँसेला सभ लेके नाँव।
बाप आ दादा तोहरा संगवा हो ताऽ सँईया देखऽ बदनाम।।
तोहरो जिम्मा....

पियला से टीबी, दमा होई जाई, जिनगी हो जाई बेकाम।
"इकबाल" राजू इज्जत जवनो बाटे हो जाई कूल्हे तमाम।
के दूशमनवन हाथ मिलाई, के करी जगवा में नाम।।
तोहरो जिम्मा.....

का करी पुलिस थाना अउरी जेहल खाना।
हम दिवाना भइलीं ना।
हम त दूसरी अजादी कऽ दिवाना भइलीं ना।।

भांग-धतूरा खाके नइखीं बउराइल।
होस हवास बाटे नइखीं पगलाइल।
जुलुम कऽ कोख में सयाना भइलीं ना।। हम त दूसरो....

बकुलन क देखे भइया माला पड़त बा।
पथरा पर देखऽ दुध लावा चढत बा।
घरवे अपना हम बेगाना भइलीं ना। हम त दूसरो .....

अपना सुराज में ना मिले दाना पानी।
चोरवन क कटत बाटे सोरहो आना चानी।
गोलिया कऽ देखे हम निशाना भइलीं ना।। हम त दूसरो...

जेकरा के पुरखा आपन देहलँ भगाई
ओकरे करेला देखऽ इ अगुवाई।
नाटक देखतऽ इनकर पुराना भइलीं ना।। हम त दूसरो....

काम, क्रोध, मद, लोभ क चक्का कइसे होई जाम हो।
इहे त कइले बालसन सब कर नींद हराम हो।

भाई से भाई कऽ गरदन इहे त कटवावे ला।
हमरा तोहरा बीच में इहे झगरा रोज मचावे ला।
रोजे तोहसे बुरा-बुरा, इ देखऽ करावे काम हो।
काम, क्रोध, मद, लोभ.....

ऐही कऽ अधिकाई हमसे तोहसे रेप करावे लाऽ।
थाना, पुलिस, कोट, कचहरी, जेल इहे भेजवावे लाऽ।
कउनो जतन लउकत नइखे कि कइसे लागी लगाम हो।।
काम, क्रोध, मद, लोभ.....

केहू एही कऽ बल पर अपना के खूब लगावता।
केहू कऽ मड़ई इहे सिर पर चढ़के फुकवावता।
गली-गली में हमके तोहके कइलस इ बदनाम हो।।
काम, क्रोध, मद, लोभ.....

चैन चुरावे, नींद उड़ावे, कुक्कुर अस दउरावे इ।
रात-दिना इ ताक-झाँक में सबकर चीज चोरावे इ।
जहाँ शान्ति बा ओइजो इ मचवावे ला कोहराम।।
काम, क्रोध, मद, लोभ.....

''राजू'' के ''इकबाल'' बता दऽ सब एइजा मेहमान हो।
ए ''अशोक'' एइजे रह जाई लूटल कुल्ह समान हो।
काम तू कुछ अच्छा कइदऽ, दुनिया लेई तब नाम हो।
काम, क्रोध, मद, लोभ.....

डा० इकबाल

सामाजिक कार्यकर्ता

गीतकार, रंगकर्मी

सचिव - सामाजिक सांस्कृतिक संस्था "प्रगति" (उ.प्र.)

सचिव - पोतन साहू स्मृति सेवा संस्था (उ.प्र.)

❒ प्रकाशित रचनाऐं :- खड़ी बोली का गीत-गजल संग्रह
"बगावत के दुहल"

❒ आने वाली रचनाऐं :- लघु नाटक संग्रह
"ओ सुबह कभी तो आयेगी"

सम्पर्क :
ग्रा० - बेटाबर खुर्द
पो० - बेटाबर कलां
जि० - गाजीपुर (उ.प्र.)
Mob. - 9415886162